ICICI Foundation
for Inclusive Growth

प्रदान Pradan
PROFESSIONAL ASSISTANCE FOR DEVELOPMENT ACTION

महिला मंडल के माध्यम से समेकित पशुपालन का प्रशिक्षण मार्गदर्शिका

जू एवं ठीला का उपचार
अण्डा सेकाई का उचित व्यवस्था
मुर्गी घर एवं रख रखाव
नियमित सफ-सफाई
पहला 15 दिन चूजा को रखने की व्यवस्था
दाना की व्यवस्था
खान-पान
चूजा का खान-पान
स्वच्छ पानी की व्यवस्था
टिकाकरण (रानीखेत एवं चेचक)
कृमिकरण
स्वास्थ्य
चूजा
विक्री

विषय सूची

क्र. सं.	विषय		पृष्ट संख्या
1.	महिला मंडल के माध्यम से समेकित पशुपालन		–2
	मुर्गी पालन :		
2.	मुर्गी पालन से लाभ	–	5
3.	मुर्गीयों में होने वाली प्रमुख बीमारीयाँ	–	7
4.	मुर्गी पालन हेतु टिकाकरण एवं कृमिकरण का वार्षिक सारणी	–	13
5.	खान–पान	–	14
6.	मुर्गी का रख–रखाव	–	18
7.	मुर्गी का अण्डा देना एवं घूर्णी प्रक्रिया	–	20
8.	देख – रेख	–	22
	बकरी पालन :		
9.	बकरीयों में होने वाले प्रमुख बीमारीयाँ	–	27
10.	बकरी पालन हेतु टीकाकरण एवं कृमिकरण का वार्षिक सारणी	–	34
11.	कृमिकरण एवं टीकाकरण वार्षिक सारणी	–	35
12.	खान–पान	–	36
13.	आवास	–	38
14.	देख–रेख	–	38
15.	बकरी की नस्ल	–	40
16.	बंध्याकरण	–	42
17.	जानवारों की सामान्य जानकारी	–	43
18.	सुअर पालन	–	44
19.	बतक पालन	–	45
20.	पशु–सखी कैसी होनी चाहिए	–	46
21.	आर्थिक लागत मूल्यांकन	–	46

1. महिला मंडल के माध्यम से समेकित पशुपालन

चित्र – 1

ये पुस्तिका महिला मंडल के माध्यम से समेकित पशुपालन करने की व्यवस्था पर आधारित है। पशुपालन संथाल परगना क्षेत्र में लोगों की दीनचर्या के साथ जुरा हुआ है और लोग इस व्यवस्था को पारंपरिक रूप से करते आ रहे हैं। घेरलु पशु जैसे देशी मुर्गी, बकरी, बत्तख, भेड़, सूअर इत्यादि परिवार के लिए न सिर्फ आकस्मिक समय में आय का स्त्रोत होता है, बल्कि परिवार में पोषण का भी उत्तम श्रोत होता है। अंण्डा, मछली, मुर्गी के मांस का सेवन शरीर को प्रोटीन, कैल्शियम जैसे आवश्यक तत्व देते है। इस पुस्तिका में देशी मुर्गी पालन एवं बकरी पालन को लेकर विशेष जानकारी का विस्तार किया गया है, कि कैसे महिलाये अच्छे से पशुपालन कर सकती है जिससे की उन्हें अतिरिक्त आत्मनिर्भरता प्राप्त हो और साथ में वे परिवार के लिए (खासकर गर्ववती महिलाओं एवं बच्चों के लिए) पोषण से युक्त भोजन की व्यवस्था कर पाऐं उसके विस्तृत वर्णन दिया गया है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है! हमारे यहाँ किसान प्रायः एक ही फसल लेते हैं एवं इसमें कुछ समय बचता है, उसमें वे बकरी एवं मुर्गीपालन कर समय के उपयोग के साथ–साथ कुछ धनोपार्जन भी कर सकते हैं, आज महिला मंडल महिला सशक्तीकरण की ओर एक कदम बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। जहाँ ग्रामीण महिलाएं आज दिन–प्रतिदिन अपनी विभिन्न आजीविका गतिविधि (जैसे : खेती–बारी, पशु–पालन, तसर आदि) के माध्यम से अपने आर्थिक स्थिति को मजबूत करने में अग्रसर हैं जिसमें घरेलु: बकरी एवं मुर्गी पालन भी मुख्य भूमिका निभा रहा है।

मुर्गी पालन

देशी मुर्गी पालन से फायदा

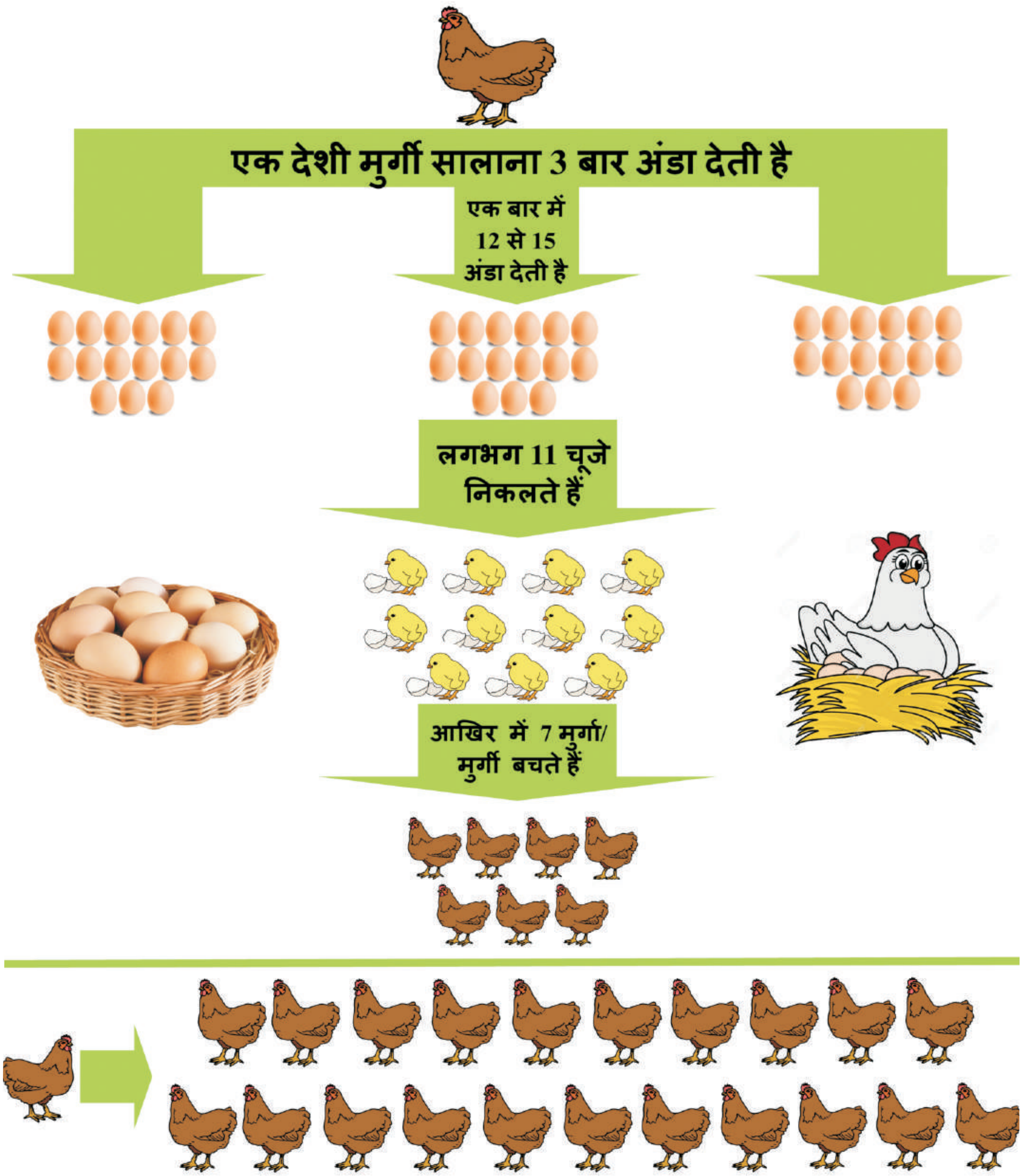

एक देशी मुर्गी से लगभग 21 मुर्गा/मुर्गी बनते हैं. औसतन 300 रु के दर से 6300 रु होता है. साथ ही साथ मुर्गी का अंडा घर में खा सकते हैं या बाज़ार में बेच सकते है.

2. मुर्गी पालन से लाभ

- शुरूआती कम लागत और अधिक फायदा।
- चूजों की कम संख्या से भी यह व्यापार शुरू किया जा सकता है।
- कम लागत में चूजों का रख रखाव एवं खान पान।
- देशी मुर्गी पालन से हमें मांस के साथ–साथ अंडा भी प्राप्त होता है।
- बाजार में देशी मुर्गी, अंडा एवं मांस की मांग काफी ज्यादा है।
- देशी मुर्गी का अंडा एवं मांस शारीर के लिए काफी लाभदायक है।
- देशी मुर्गी की बिक्री आसानी से करके अपना जरूरत को पूरा किया जा सकता है।
- मुर्गी के मल–मूत्र का प्रयोग जैविक खाद के रूप में आसानी से किया जा सकता है।
- ऐसे लोग जो किसी कारणवश ज्यादा मेहनत का कार्य नहीं कर पाते हैं, वो भी मुर्गी पालन आसानी से कर सकते हैं।
- घर में बचे हुए खाद्य पदार्थ का उपयोग किया जा सकता है।
- मुर्गी पालन का व्यवसाय किसी भी समय एवं मौसम में शुरू किया जा सकता है।
- महिलाऐं घर के काम–काज के साथ–साथ मुर्गी पालन का कार्य आसानी से कर सकती हैं।
- पूजा पाठ एवं पर्व–त्यौहार में भी काम आता है।
- अंडा बेचने से ज्यादा फायदा नहीं होता है। इसलिए किसान मुर्गी बड़े कर–कर 7–8 महीने पे बेचते है।
- देशी मुर्गी अंडा देती है, अंडा से चूजा निकलती है एवं चूजा को पालती है।

मुर्गीयों में पाये जाने वाली कृमि

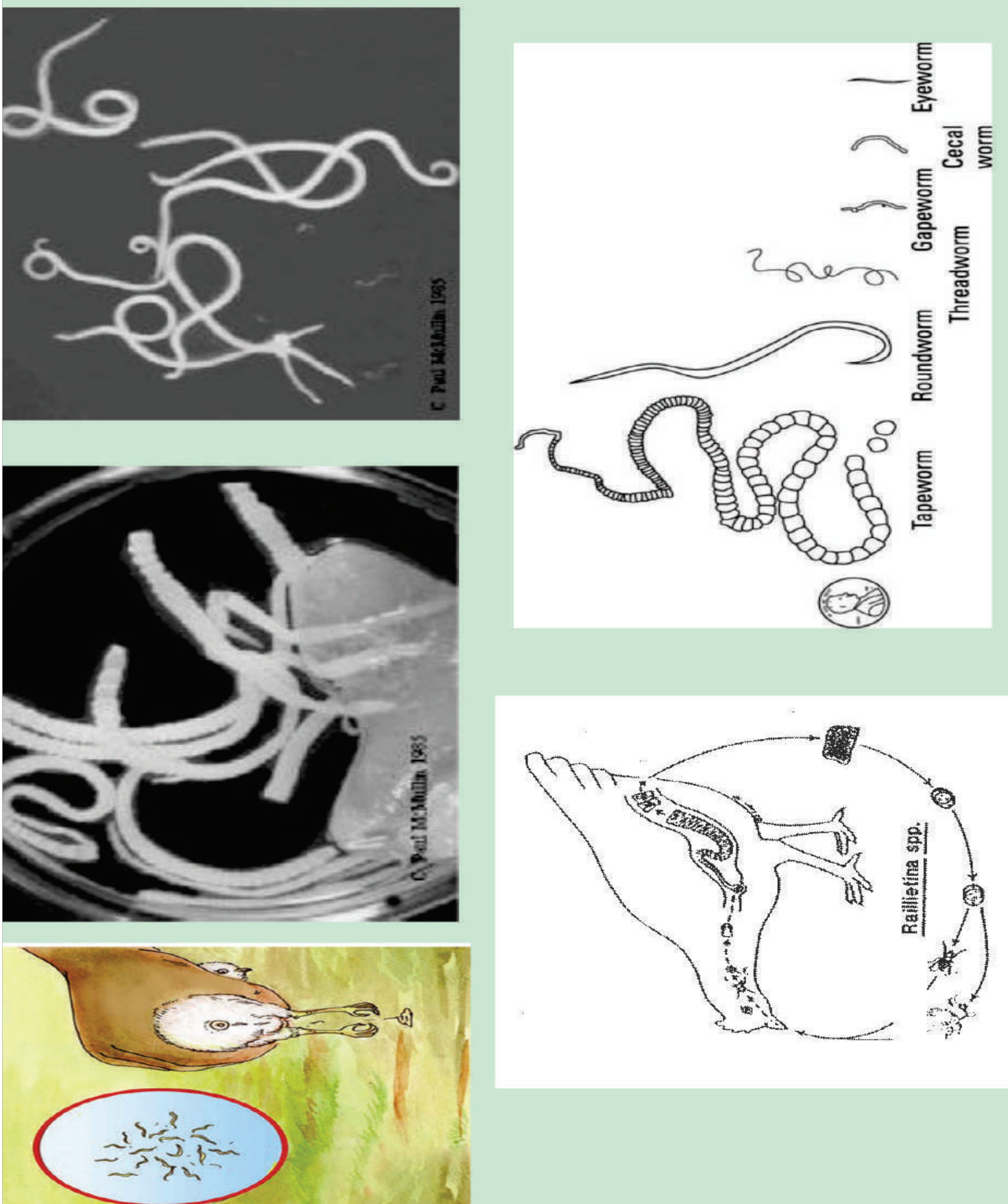

चित्र – 2

3. मुर्गीयों में होने वाले प्रमुख बीमारियाँ

हमारे क्षेत्र में ज्यादातर मुर्गीयाँ में कृमि पाई जाती है जो मुख्यतः आँतों में होता है इसके साथ–साथ शरीर के ऊपरी भाग में जू एवं ठीला पाया जाता है। मुर्गी में चेचक रोग भी पाया जाता है जो एक विषाणु जनित रोग है तथा सबसे ज्यादा खतरनाक बिमारी है रानीखेत लिसके कारण गाँव के लगभग ज्यादा से ज्यादा 90 प्रतिशत तक मुर्गीयाँ मर जाते है।

A. कृमि (Worm) चित्र – 2

- मुर्गीयों के आँतों में मुख्यतः दो प्रकार के कृमि पायें जाते है। गोल कृमि एवं फिता कृमि।
- यह अन्तः कृमि सभी आयु के मुर्गीयों में पाई जाती है, परन्तु यह बढ़ते हुए चूजों में 12 सप्ताह की आयु में ज्यादा होता है।
- सारे कृमि मुर्गी के पेट के अन्तः नली में रहते है तथा सारा खाना खा जाते है।
- कृमि का आक्रमण होने से शरीर का दुबला पतला होना, अंडा कम कर देना, कलगी का रंग फीका पर जाना, भूख की कमी, खून की कमी एवं कभी–कभी दस्त भी होता है।
- पेट में कृमि ज्यादा दिन तक होने से मुर्गी की मृत्यु भी हो सकती है।
- यह घर के बाहर या अन्दर गन्दा दाना–पानी पीने से भी होता है।

कृमिकरण का उपचार :

- अलबेन्डाजोल या फेंबेन्दाजोल (Albendazole/Fenbendazole) देना चाहिए।
- रहने के जगह एवं बिछावन को सुखा रखें। दीवार एवं फर्श को लेपन करें।
- मुर्गी को हप्ताह में एक बार पानी के साथ कच्चा हल्दी पीस के देने से कृमि कम होता है।

B. जूं एवं ढीला (Tick & lice) : चित्र – 3

- देशी मुर्गी की शरीर में जूं एवं छोटे–छोटे कीड़े आसानी से रहते है।
- ये सारे कीड़े मुर्गी को काटते है एवं शरीर से खून चूसते है।
- ये सारे कीड़े मुर्गी घर की दीवार में आसानी से छुप के रहते है।

उपचार :

- राख एवं गैमक्सिन (5:1) का मिश्रण बनाकर मुर्गी के शरीर में अच्छे से लेपन करें।
- 2 भाग मालाथियन (Malathiyan) पानी में मिश्रण कर मुर्गी के शरीर पर छिड़काव करें।
- 2 भाग मालाथियन (Malathiyan) पानी में मिश्रण कर मुर्गी घर की दीवार एवं फर्श को लेपन करें।
- भैंस का गोबर से मुर्गी घर की लेपन करें।
- मुर्गी घर को सुखा राख से साफ करें नियमित।
- 10 ग्राम तंबाकू पत्ता 1 लीटर पानी में 10 मिनट तक उबलना है, उसके बाद पानी को निकालके इस पानी से मुर्गी घर का लेपान करें। इसके बाद घर को कुछ समय के लिए खुला छोड़ना चाहिए।

मुर्गीयों में होने वाली जूँ एवं ढीला

चित्र – 3

मुर्गी का रानीखेत बीमारी

चित्र – 4

मुर्गी का चेचक बीमारी

चित्र – 5

C. रानीखेत (RANIKHET) : चित्र - 4

यह एक विषाणु जनित (Viral) रोग है, जो गंदे भोजन एवं पानी के सेवन और गंदे जगह में रहने से होता है। 90% से ज्यादा मुर्गीयाँ की मृत्यु इस बीमारी से होती है।

रानीखेत बीमारी के लक्षण :

- नाक एवं मुंह से पानी / लार आना।
- पतला दस्त (चूना जैसा)।
- मुर्गीयों का सुस्त हो जाना एवं खाना पीना बंद कर देना।
- आँख में लासा आना और आँख बंद कर झूमना।
- साँस लेने में कठिनाई / लम्बा साँस और घरघराहट।
- पंख मुड़ना या 7–8 दिन बाद पंख काम करना बंद कर देता है सिर पीछे की तरह हो जाता है / सिटी जैसी आवाज निकलना।
- तेज बुखार।
- मुर्गी का फूल लाल से काला हो जाना / आँखों का रंग का बदल जाना।

रानीखेत से उपचार :

बीमारी से बचाव के लिए लासोटा का टीका आँख में एक बूंद देना चाहिए।

D. मुर्गी चेचक (Fowl Pox) : चित्र - 5

यह एक विषाणु जनित (Viral) रोग है, जो की गंदे पानी का सेवन और गंदे जगह में रहने से होता है।

मुर्गी चेचक के लक्षण :

- पुरे सिर एवं शरीर में छोटे–छोटे दाने या फुंसी का निकलना।
- जीभ में घाव हो जाना।
- मुर्गी का सुस्त हो जाना एवं खाना पीना बंद कर देना।
- चोंच के कोने, तालु, मुँह के भीतर एवं कंठ में जाली जैसा पीले रंग की पर्त दिखाई देना।
- साँस लेने में दिक्कत होना।

मुर्गी चेचक का उपचार :

बीमारी से बचाव के लिए फाउल पॉक्स का टीका 0.2 मिलि चमड़ा में देना चाहिए।

टिका-करण की प्रक्रिया

चित्र – 6

टिकाकरण कैसे काम करता है।

चित्र – 7

4. मुर्गी पालन हेतु टिकाकरण एवं कृमिकरण का वार्षिक सारणी

माह	जनवरी		फरवरी	मार्च	अप्रैल		मई	जून	जुलाई		अगस्त	सितम्बर	अक्टुबर		नवम्बर	दिसम्बर
कृमिकरण/टीका	कृमिकरण	लासोटा (टिकाकरण)		फाउल पोक्स (टीकाकरण)	कृमिकरण	लासोटा (टिकाकरण)			कृमिकरण	लासोटा (टिकाकरण)		फाउलपोक्स (टीकाकरण)	कृमिकरण	लासोटा (टिकाकरण)		
दवा का नाम	अल्बेन्डाजोल/फेनबेन्डाजोल	थार्मास्टेबल लासोटा		फाउलपोक्स	अल्बेन्डाजोल/फेनबेन्डाजोल	थार्मास्टेबल लासोटा			अल्बेन्डाजोल/फेनबेन्डाजोल	थार्मास्टेबल लासोटा		फाउलपोक्स	अल्बेन्डाजोल/फेनबेन्डाजोल	थार्मास्टेबल लासोटा		

दवा का नाम	दवा का मात्रा	कहाँ देना है	किमत (मात्रा)	टिप्पणी
अल्बेन्डाजोल/ फेनबेन्डाजोल	1 माह उम्र 1 बूंद से 4 माह उम्र 4 बूंद, 4 माह से ज्यादा उम्र 5 बूंद, 21 दिन से कम उम्र के चूजा को नहीं देना है,	बड़ाड्रो के द्वारा पिलाना है	310/– प्रतिलीटर एवं 396/– प्रतिलिटर 2500 डोज	कभी भी दे सकते है 3 महीना में 1 बार, हर साल अल्बेन्डाजोल एवं फेन्बेन्डाजोल को अदला बदली करना होगा।
लासोटा	15 दिन से कम उम्र के चूजा को नहीं देना है।	कोई भी एक आँख में	75/– प्रति 100 डोज	मिलाने के बाद 24 घंटा तक रहेगी।
फाउलपोक्स	2 माह के ज्याद उम्र का मुर्गी 0.2 मीलि प्रति मुर्गी	कोई भी एक पंख के नीचे चमड़ा एवं मांस के बीच में 2 मीलि का सिरिंज से	42 रु० प्रति 200 डोज	मिलाने के बाद 2 घंटा तक रहेगी।

चित्र – 8

5. खान–पान

- एक वयस्क मुर्गी के लिए कम से कम 75 ग्राम दाना एवं 200 मिली पानी की आवश्यकता होती है।
- मुर्गी को दिये जाने वाला पानी साफ होना चाहिए एवं साफ बर्तन का प्रयोग करना चाहिए। गर्मी के समय में मुर्गी का पानी की व्यावस्था करना जरूरी है।
- मुर्गीयों अपने भोजन की जरूरत को काफी हद तक इधर –उधर से पूरा कर लेती है।
- पर इनके समुचित विकास के लिए इसके अलावा भी अलग से घर में बचा हुआ चावल, खूदी दाना, मकई दाना, सब्जी का छिलका इत्यादि देना जरूरी है।
- चूजों के लिए अलग से भोजन एवं पानी की व्यवस्था होनी चाहिए।
- जन्म से 21 दिन तक चूजों की खान–पान में विशेष ध्यान देने की जरूरत है।

मुर्गी के संतुलित आहार

क्र० सं०	आहार का प्रकार	मात्रा	दर (रु० में)	लागत (रु० में)
1	भुसा	6 किलो	1	6
2	खुदी चावल	6 किलो	10	60
3	खल्ली	2 किलो	25	50
4	सुखी मछली/धोंधा चूर्ण	1 किलो	20	20
5	नमक	50 ग्राम	10	1
6	मिनरल मिक्सचर	50 ग्राम	200	10
7	हरी पत्ता, साग, पलास पत्ता, अजोला	खाने के समय में मिलायें	–	–
कुल				147/–

- इस प्रकार के भोजन देने से मुर्गी 4–4.5 माह में 1 किलो वजन की होगी लेकिन कृमिकरण एवं टीकाकरण समय–समय पर होना चाहिए।
- 0.5 से 1 किलो वजन के मुर्गी को चारा दिन में दो बार देना चाहिए – प्रतिदिन 50 ग्राम/मुर्गी
- चूजों के लिए 0 दिन से 21 दिन तक दीमक एवं खूदी चावल देना चाहिए।

मुर्गीयों का चारा

चित्र – 9

चूजों को खिलाने की तरीका

चित्र – 10

चित्र – 11

पानी :–

- मुर्गी को पानी साफ देना चाहिए।
- पानी में कभी– कभी हल्दी मिलाना चाहिए।
- मुर्गी को गर्मी के दिनों में अधिक पानी कि अवश्यकता होती है।

नोट :– दीमक पालन का तरीका :

- मटकी लेंगें
- सुती का कपड़ा
- जुट का बोरा
- कागज
- सुखा गोबर
- पानी

सभी को मिलाकर थोड़ा दीमक डाल कर मटका पलट कर इस प्रकार से रखे कि हवा न प्रवेश कर सके तो 7 दिन में दीमक हो जायेगा।

मटका को छाया में रखें ताकि दीमक धुप से मरे नहीं मुर्गी को दाना देने के लिए मिट्टी या बाँस का खाने का बना होता है।

चित्र – 12

मुर्गिओं का घर

चित्र – 13

6. मुर्गिओं का रख–रखाव

मुर्गी घर

गाँव में देशी मुर्गी, चूजा, मादा मुर्गी, मूर्गा छोटा–बड़ा मिला के रहते है।

दिन में मुर्गी आंगन में घूमते है एवं रात में घर में रहते है। साधारण तौर पर देशी मुर्गी का अलग घर नहीं रहता है। लेकिन व्यवसाय हिसाब से मुर्गी पालन करने के लिए मुर्गी का घर या अलग से रखने का जरूरत होता है। मुर्गी घर गाँव में पाये जाने वाले बाँस, मिट्टी ईत्यादि से बनता है एवं ये मुर्गी को परेशान या मारने बाले जानबरों से बचाता है। मुर्गी घर अधिक बारिश, धूप या ठंडा से बचाता है, उसके साथ–साथ अंडा एवं चूजा भी सुरक्षित रहता है।

- मुर्गीयों को ठीक से रख–रखाव के लिए सबसे जरूरी है मुर्गी घर का निर्माण।
- घर ऊँची जगह पर स्थित हो।
- एक मुर्गी के लिए 1 वर्ग फीट जगह की जरूरत होती है।
- मुर्गी घर हवादार होना जरूरी है। दोनो तरफ (आमने–सामने) दीवार में जाली का प्रयोग।
- अधिक धुप, ठंढक तथा वर्षा से मुर्गीयों का बचाव हेतु उत्तम प्रबंध हो।
- फर्श का पक्का होना जरूरी नहीं है लेकिन जमीन से आधा फीट की ऊँचाई हो जिससे साँप एवं चूहे से बचाव हो सके।
- जंगली जानवर, कुत्ता, बिल्ली से बचाव के लिए दरवाजा का प्रयोग जरूरी है।
- ठण्ड से बचाव के लिए ठण्ड के दिनों में जाली को बंद रखना जरूरी है।
- चूजों को रखने के लिए अलग से टोकरी या पिंजरे की व्यवस्था होनी चाहिए।
- बड़े मुर्गी को मुर्गी घर में रखने के लिए बांश से मचान बनाया जाता है। चूजा को रखने हेतु मुर्गी घर के जमीन पे व्यवस्था किया जाता है। मुर्गी घर जैसे गिला व बग्बुदार नहीं होना चाहिए।
- मुर्गी घर रोज राख व चुना से साफ करना चाहिए।

मुर्गी घर में बाड़ा मुर्गी/मुर्गा रखने की तरिका

चित्र – 14

मुर्गी का अण्डा देना एवं घूर्णी प्रक्रिया की व्यवस्था

चित्र – 15

7. मुर्गी का अण्डा देना एवं घूर्णी प्रक्रिया

ढाड़/मादा मुर्गी चुनने का तरीका :-

- देशी मुर्गी 6–7 माह की उम्र में अंडा देना शुरू करती है एवं एक साथ 12–20 अंडे देती है। तथा यह प्रक्रिया हर 3–4 माह के अंतराल में होती है।
- 60 प्रतिशत से ज्यादा अण्डा से चूजा निकलता होगा।
- मादा मुर्गी सुस्त एवं बड़ा होना चाहिए।
- चूजा को ठीक से ध्यान देना एवं खुद का अंडा खराब नहीं कर रहें होगें।
- मादा मुर्गी का चयन अच्छे मुर्गी के नस्ल को देखते हुए करना चाहिए।
- 7 मुर्गी के लिए एक अच्छा मुर्गा का जरूरत है।

घूर्णी प्रक्रिया की व्यवस्था :- चित्र – 15

- बाँस की टोकरी / कार्टून पेटी में मुर्गी अंडा देती है। अंडा देने की जगह में पुआल / पत्ता / बालू रखना जरूरी है ताकि अंडा टूट न जाए। बालू के साथ राख मिलाने से मुर्गी की जूँ नहीं होती लेकिन गर्मियों के समय में राख मिलाना नहीं चाहिए।
- हर एक मुर्गी के लिए एक अलग सुरक्षित अंडा देने की जगह होनी चाहिए एवं हर समय एक अंडा उस जगह में रहना चाहिए।
- घूर्णी प्रक्रिया कुल 21 दिनों तक चलती है। इस प्रक्रिया में मुर्गी अंडे के ऊपर बैठती है।
- भूसी का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए, क्योंकि जू लग जाता है।
- अंडे पर निशान या नम्ब्रिंग करना चाहिए। एवं ग्रर्मी के समय पर पहला 5 अण्डा खा लेना चाहिए क्योंकि इस अण्डों से चुजें नहीं निकलते है।
- खराब अंडे या अच्छे अंडे का पहचान करना (इसे रोशनी में जर्दी का पहचान कर सकते है)।
- घूर्णी प्रक्रिया के लिए अच्छे किस्म के अंडे का चुनाव करना चाहिए (रौशनी में जर्दी का पहचान से) एवं एक बार में 15 अंडे रखनी चाहिए, जिससे 10–12 चूजे निकलेंगे।
- इस प्रक्रिया के समय मुर्गी के खाने पीने का प्रबंध अंडे के आस–पास कर देना चाहिए जिससे मुर्गी को घुरनी के लिए ज्यादा वक्त मिले।

घूर्णी प्रक्रिया के लिए अच्छे अंडे की चुनाव करने की लाईट टेस्ट :- चित्र – 17

- घृर्णी प्रक्रिया शुरु होने की 6–7 दिन के बाद, अंधकार घर में मोमबत्ती ब टोर्च ब इलेक्ट्रिक बल्ब जलाकर अंडे की भ्रूण एवं खून का नस देखना चाहिए। जिस अंडे पे भ्रूण ब जर्दी नहीं दिखाई देंगें, उसको बहार कर खाने के लिए इस्तेमाल करना चाहिए।
- घूर्णी प्रक्रिया की 17–18 दिन में फिरसे और एकबार ये टेस्ट करना चाहिए। इस समय अंडा खराब नहीं होगा।

अंडे के देख-रेख :-

- घृर्णी प्रक्रिया से पहेले ब 6–7 दिन के अन्दर लाईट टेस्ट से निकलता हुआ भ्रूण नहीं रहने वाला अंडा खाने के लिए अलग कर देना चाहिए। अच्छा अंडा पानी में डूब जाता है।
- अंडा संग्रहीत करने के लिए ठंडा एवं छाओं जगह की जरुरत है। अंडा को बालू के ऊपर रखने से ठंडा रहता है। लेकिन, सेने वाला अंडा कभी पानी में धोना नहीं चाहिए। इससे अंडे की छिलका खराब हो जाता है। अंडा को तेल से पोछने से अंडा ज्यादा दिन संग्रहीत होता है।

मुर्गी के साथ चूजा को अलग रखने की तरीका

चित्र – 16

घुर्णी प्रक्रिया के लिए अच्छे अण्डे की चुनाव

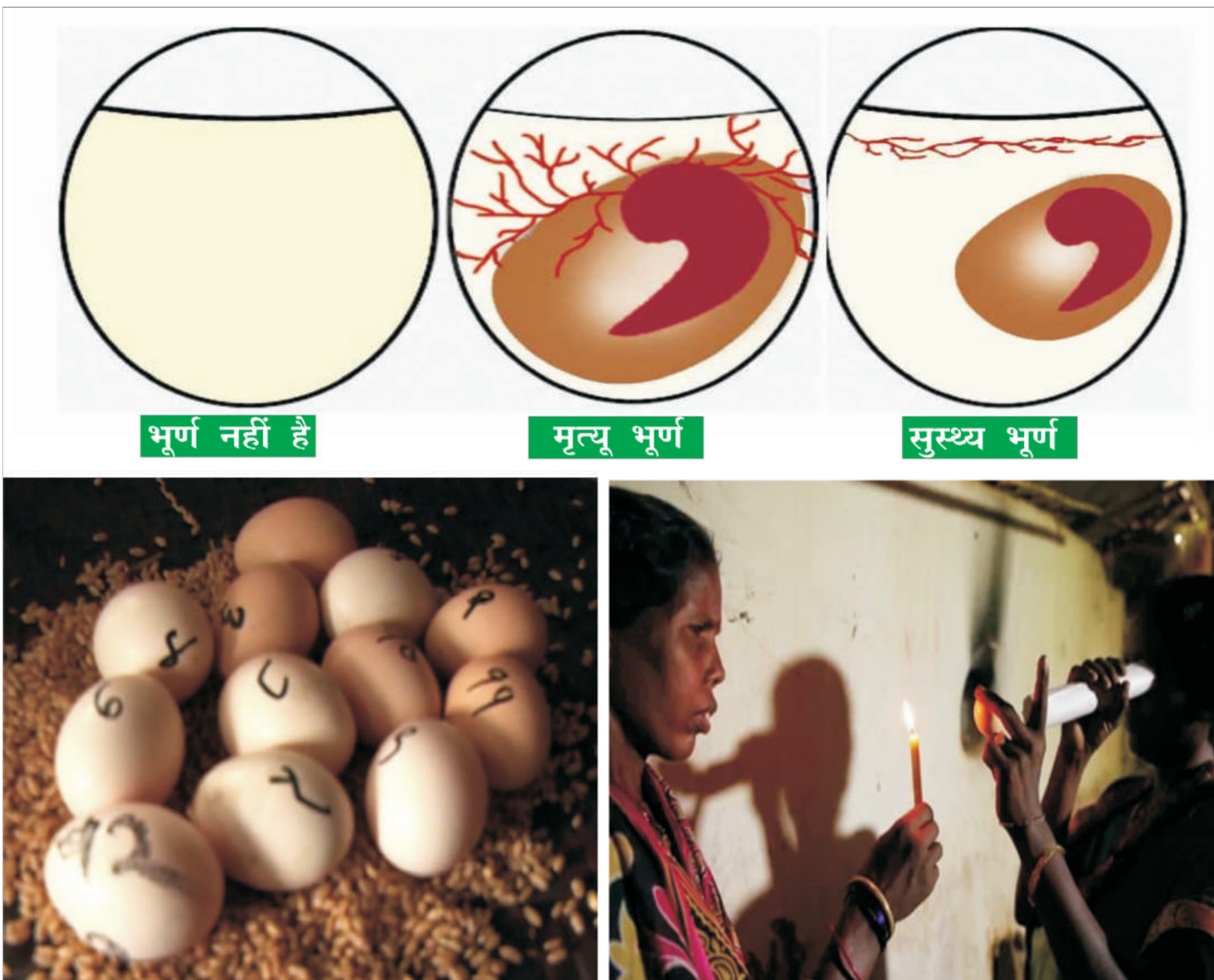

चित्र – 17

8. देख-रेख

- फर्श को सुखा रखना, इसमें राख/कुढ़ा/सुखा घास का प्रयोग करने से साफ करने में आसानी होगी एवं ठण्ड के दिनों में बचाव भी होगा।
- सप्ताह में कम से कम एक बार पोछा लगाना चाहिए।
- बीमारियों से बचाव के लिए मुर्गी घर को रोज साफ करना जरूरी है एवं प्रति माह कम से कम एक बार चुना और मालाथियन (2 %) का प्रयोग दीवार में करें।
- मुर्गीयों को खाना घर के आँगन में ही देना चाहिए, ध्यान रहे की आस पास कुत्ते, बिल्ली आदि ना हो।
- दाना पानी के लिए एक साफ बर्तन की व्यवस्था होनी चाहिए।
- बीमार मुर्गी को अन्य मुर्गी से अलग रखें तथा बीमार होने पर तुरंत नजदीकी पशु सखी या आजीविका मित्र की मदद लें।
- हर साल प्रजनन करने वाला मुर्गा को बदलें।
- चूजा का बढ़ना व उत्पादन उसके पहेली महीनें में निर्भर करता है। इसलिए प्रथम महिना चूजा को बाहार नहीं छोड़ना चाहिए एवं घर में रखके खाना देना चाहिए।
- पहेला 3–4 हफ्ता चूजा को ज्यादा गर्मी की जरूरत होती है। इसलिए ठंडा व वारिश के समय में चूजा एवं मादा मुर्गी को बाहार में नहीं छोड़ना चाहिए। जरूरत हेतु लंठन ब बल्ब से गर्मी की व्यवस्था करना चाहिए।

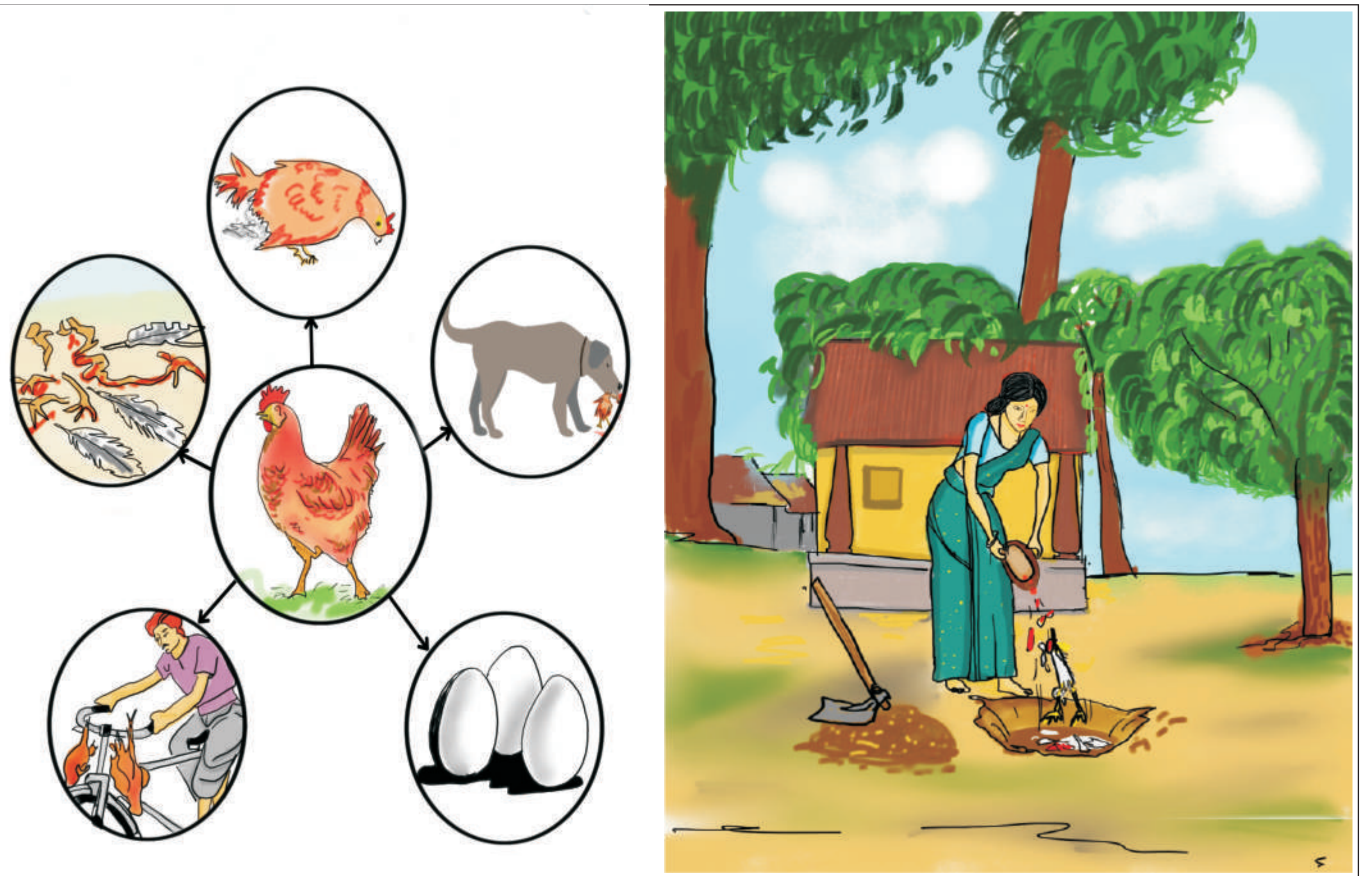

चित्र – 18

बकरी पालन

बकरी पालन से फायदा

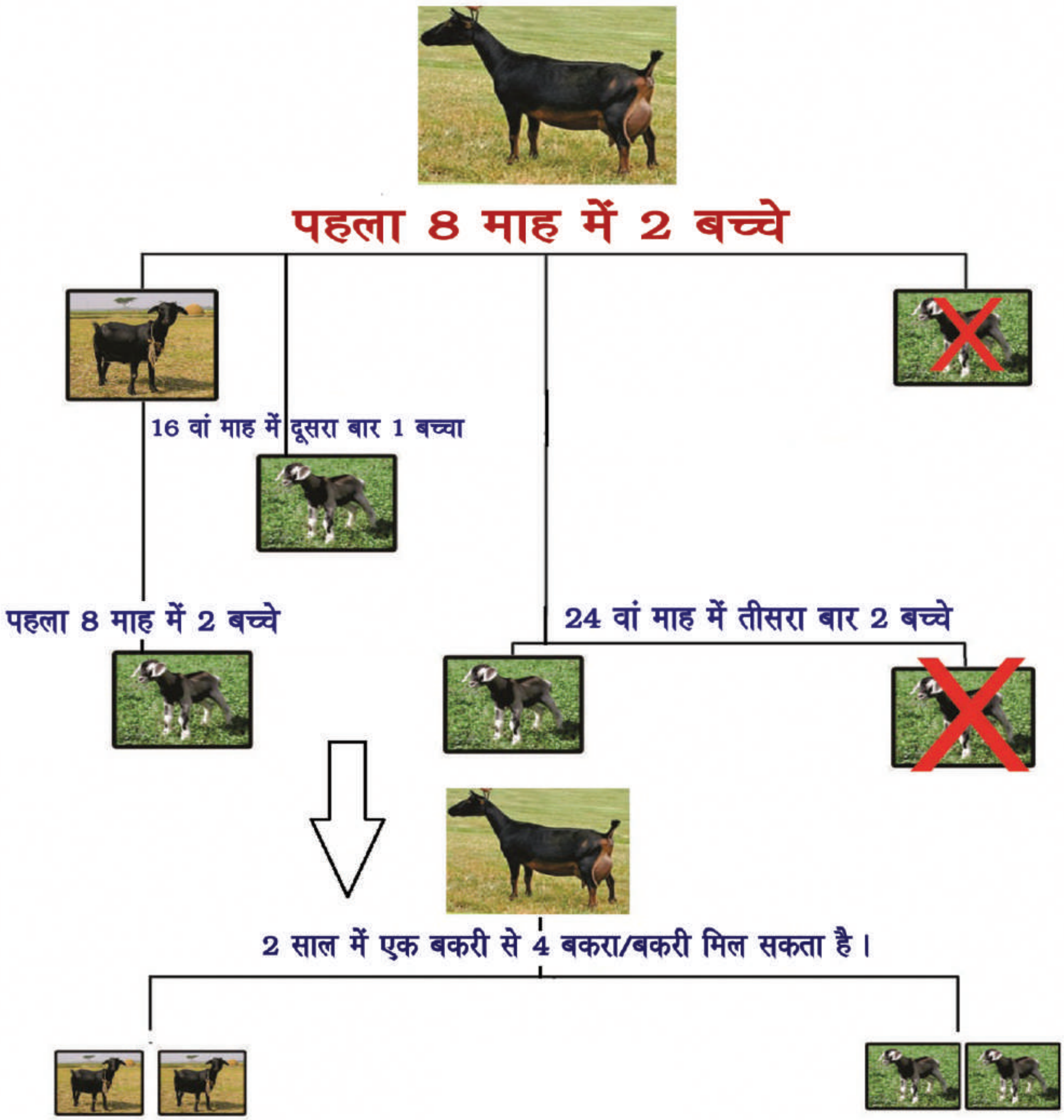

2 साल में 4 बकरियाँ से प्रति बकरी रु 3000/- के दर से,
एक साल में रु 6000/- का फायदा मिल सकता है।

बकरी में पाये जाने वाली कृमि

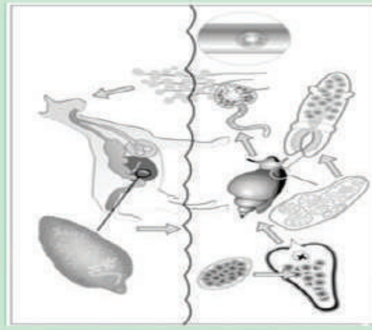

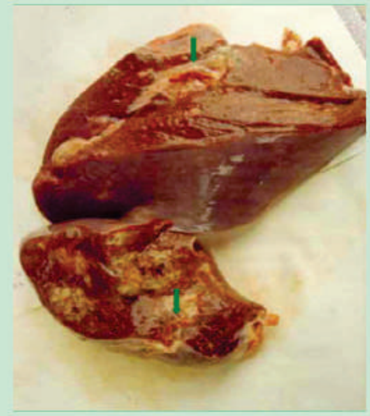

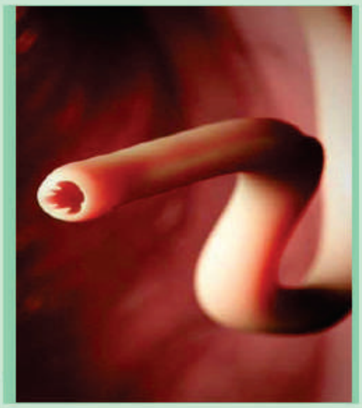

चित्र – 19

वकरी के शरीर में कृमि का लक्षण

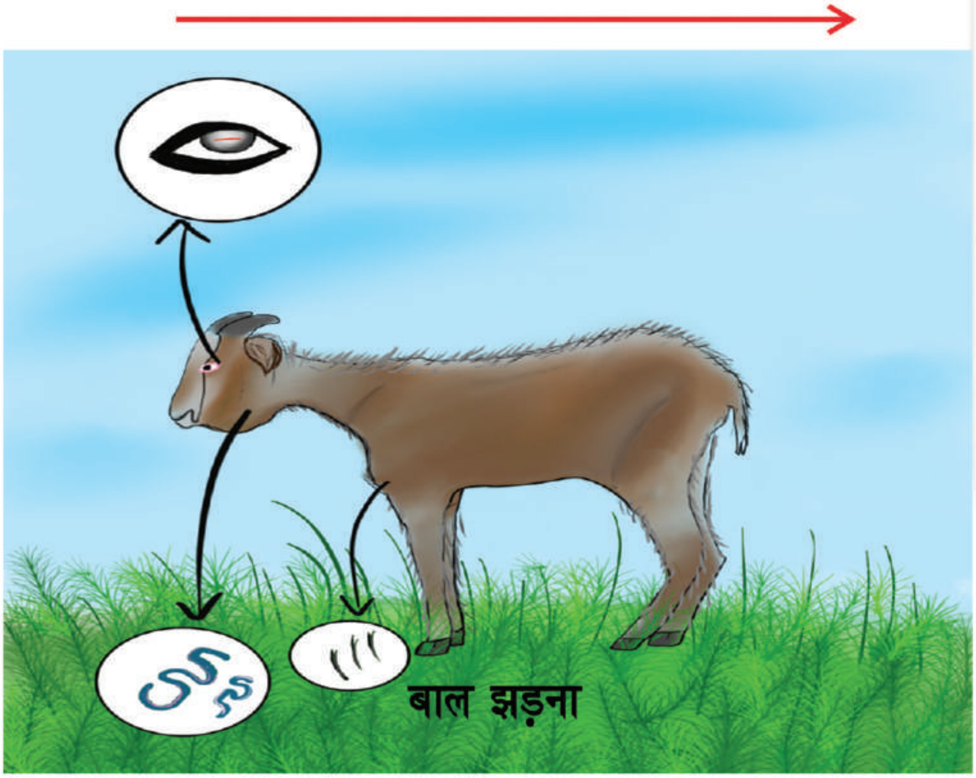

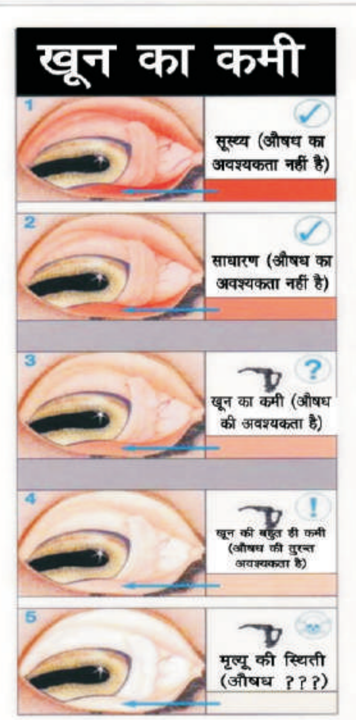

चित्र – 20

कृमि का जीवन चक्र

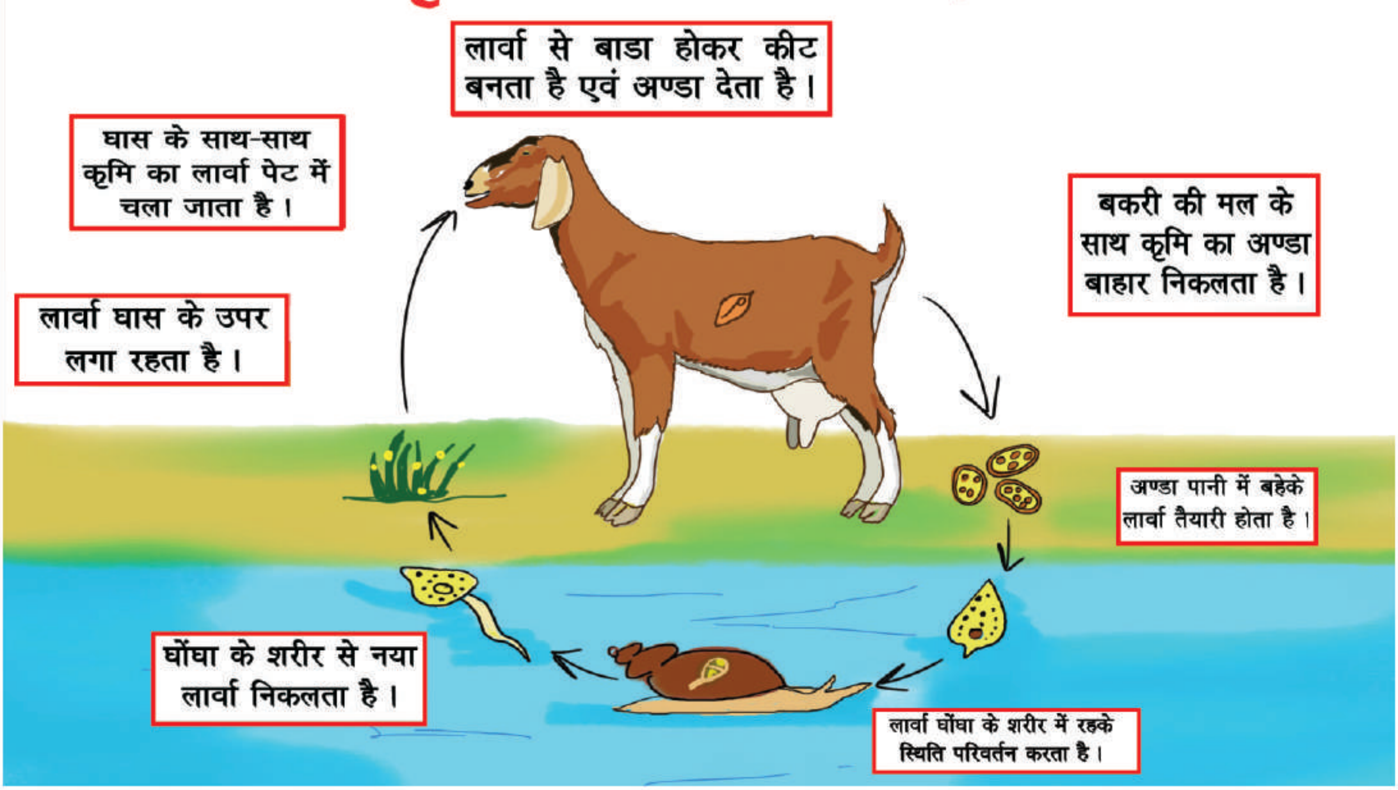

चित्र – 21

9. बकरीयों में होने वाले प्रमुख बीमारीयाँ

A. कृमि रोग :- चित्र – 19

- सारे कृमि बकरी के पेट के अन्तः नाली में रहते है तथा सारे खाना खा जाते है।
- कृमि का आक्रमण होने से शरीर का दुर्बल पतला होना, भूख की कमी, खून की कमी एवं कभी–कभी दस्त भी होता है।
- पेट में कृमि ज्यादा दिन तक होने से बकरी की मृत्यु भी हो सकती है।
- यह घर के बाहर या अन्दर गन्दा दाना–पानी पीने से भी होता है।

प्रकार : 1. गोलाकार, 2. फीता, 3. पत्ता कृर्मि

कृमिकरण

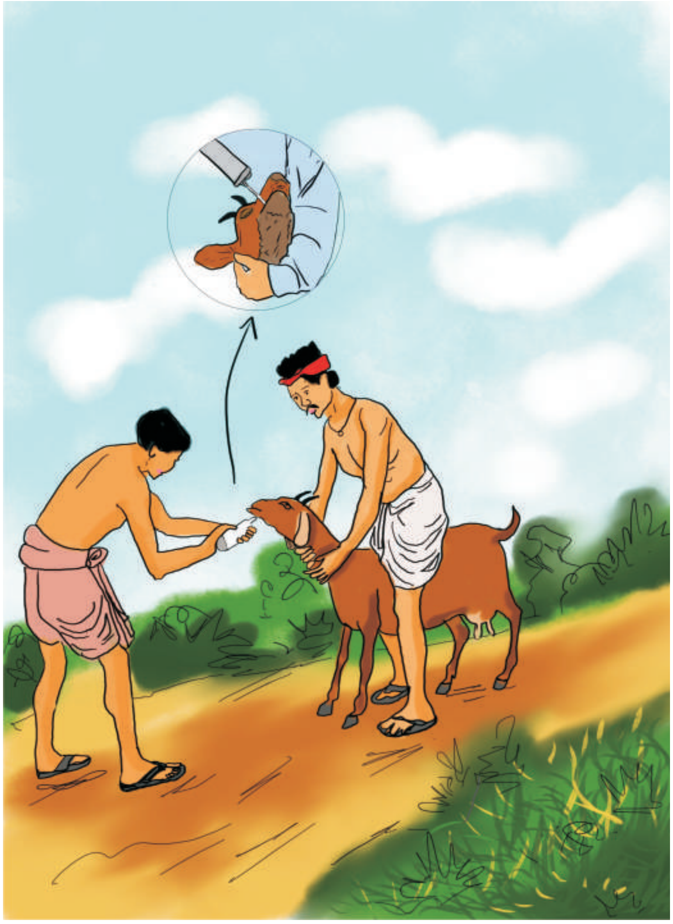

चित्र – 22

बीमारी होने का कारण

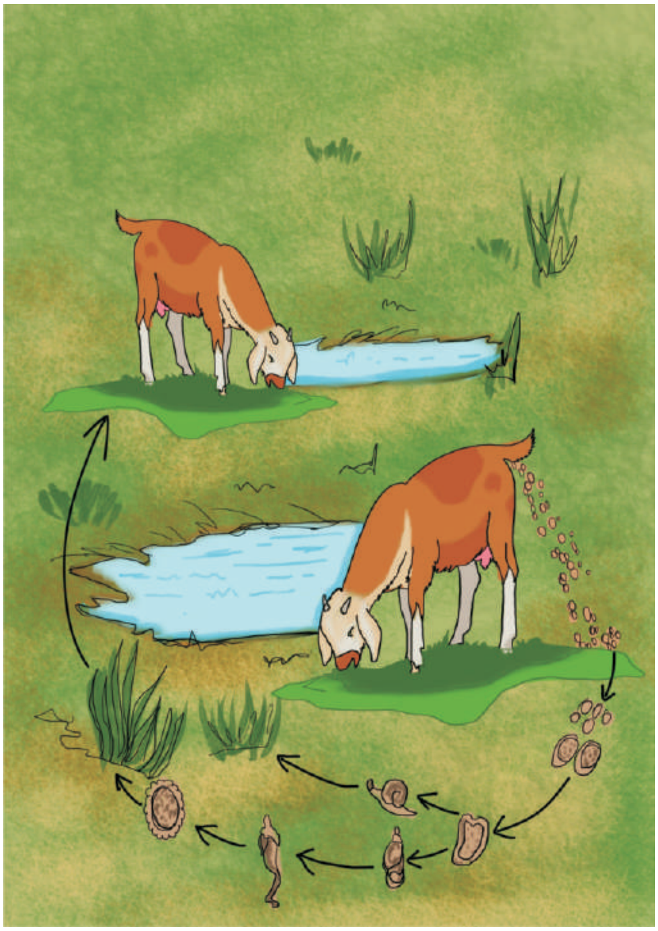

चित्र – 23

उपचार :

- कृमिकरण के लिए अलबेन्डाजोल या फेंबेन्दाजोल का घोल बकरी के मुँह में उसके उम्र के अनुसार दिया जाता है।
- रहने के स्थान को सुखा रखें।

बकरी का पी0पी0आर

चित्र – 24

बकरी मे चेचक की बीमारी

चित्र – 25

बकरी का खुराह-चपका रोग

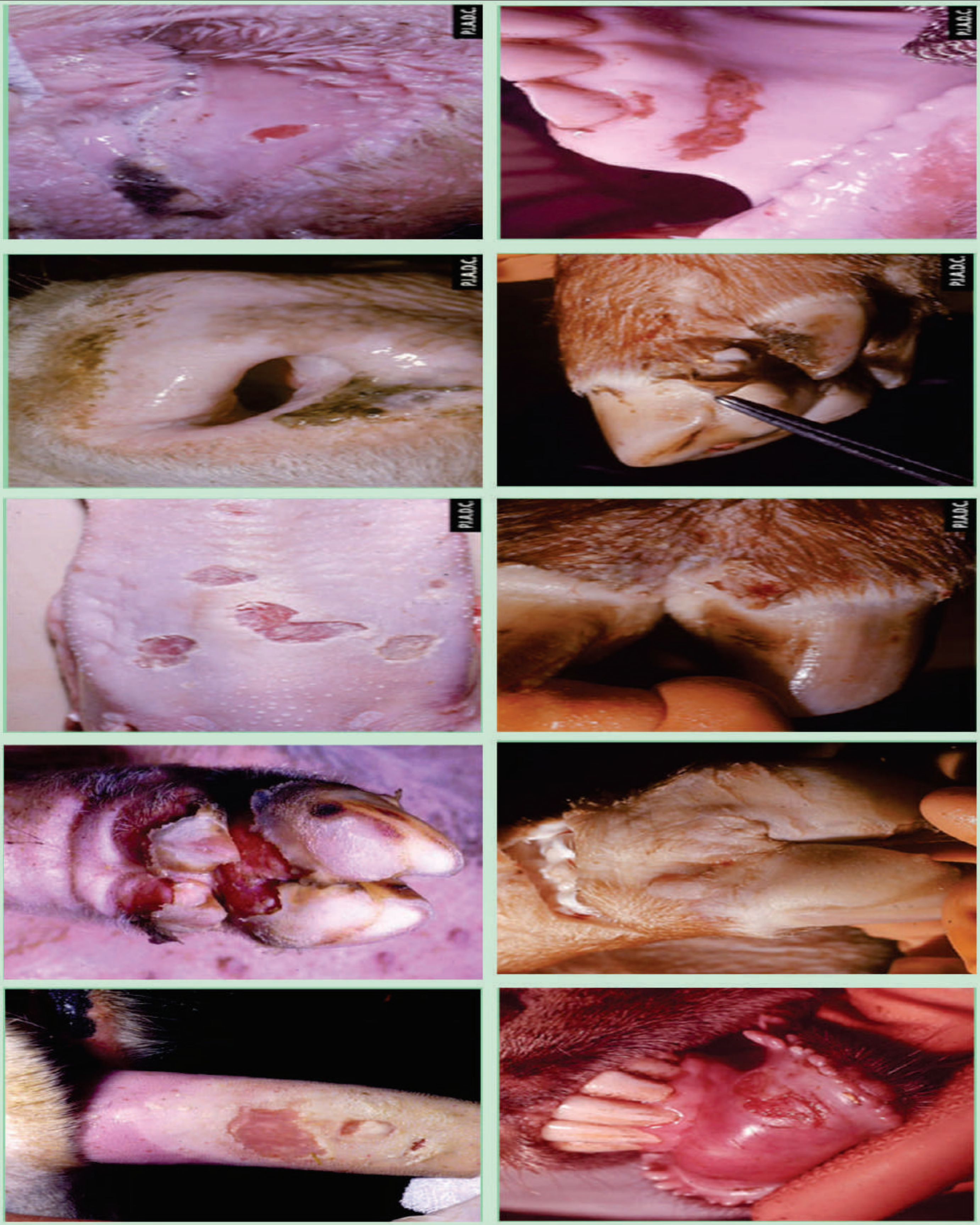

चित्र – 26

एंटेरोटोक्सिमिया बीमारी

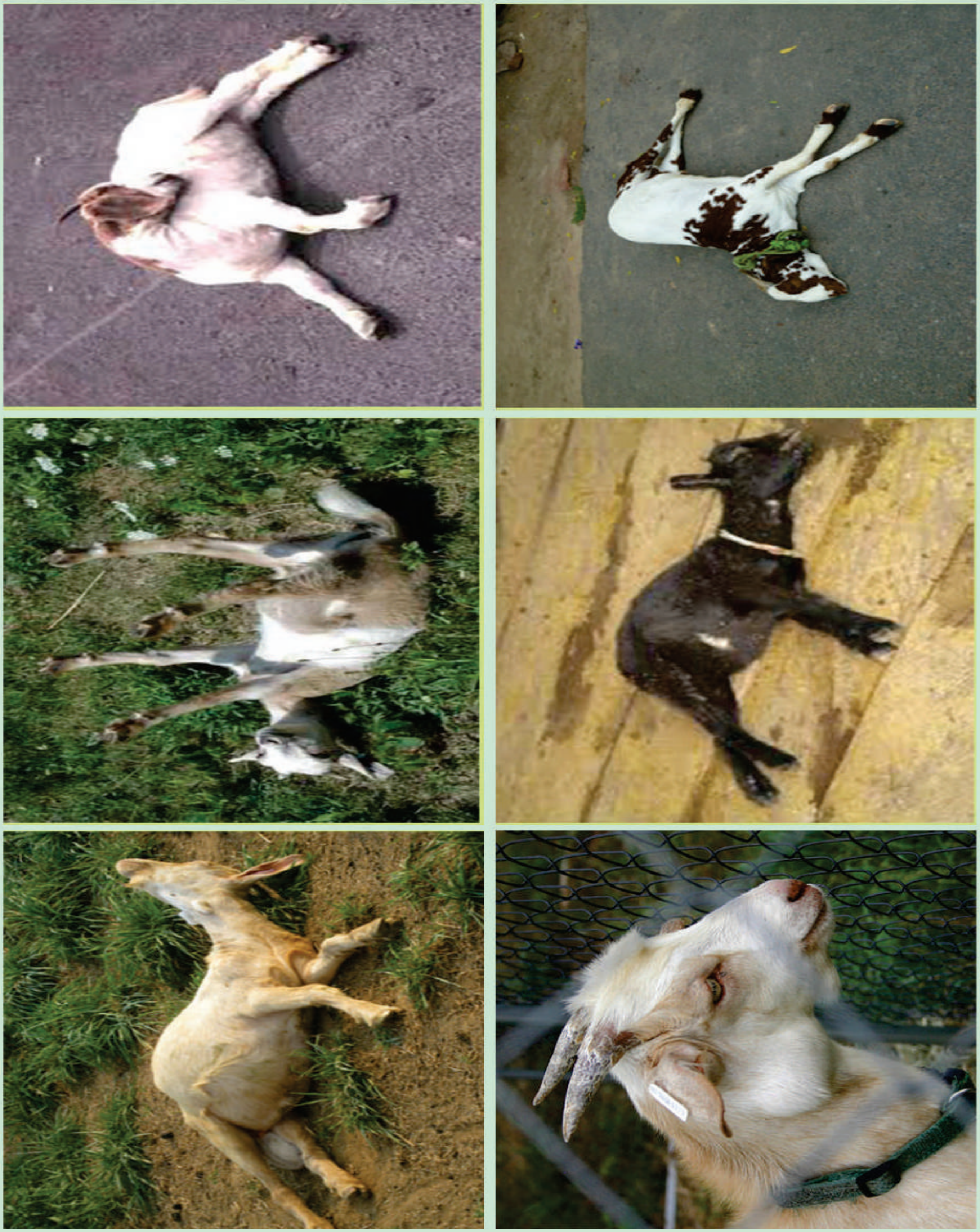

चित्र – 27

B. प्लेग (पी.पी.आर.) रोग :– चित्र – 24

यह बकरीयों में तेजी से फेलने वाला संक्रामक रोग है जो एक विषाणु से होता है, रोगी पशु में से 50 से 90 प्रतिशत एक सप्ताह में मर जाते है।

लक्षण :

- ❖ तेज बुखार, सुस्ती एवं बार–बार छींक आना।
- ❖ पतला दस्त तथा दस्त के साथ कभी–कभी खून आना।
- ❖ पीला बलगम नाक से निकलना।
- ❖ मुँह तथा जीभ में छाला होना।
- ❖ साँस लेने में तकलीफ होना
- ❖ आँख से सफेद किची/कीचड़ निकलना

उपचार :

- ➢ बीमारी होने से पहले पी.पी. आर. टीका का उपयोग करना।
- ➢ निर्जलीकरण रोकने के लिए ओ.आर.एस. का घोल पिलाना।

बचाव :

- ❖ बकरी के रहने का जगह को साफ रखना, रोज फिनाइल से फर्श को धोना चाहिए।
- ❖ बीमार बकरी को झुण्ड से अलग रखना चाहिए।

C. चेचक (पॉक्स) रोग चित्र – 25

यह बकरियों का विषाणु जनित चर्म रोग है जो मच्छरों के काटने से बकरियों में रोग फैलता है।

लक्षण :

- ❖ तेज बुखार, साँस लेने में तकलीफ।
- ❖ खाने पीने में कम रूचि
- ❖ कान, चेहरा, आँख का पलक, होंठ, जीभ का अंदुरूनी हिस्सा एवं थन/चीर जैसे भागों पर लाल चकते बनना तथा बाद में फुलकर गुठली नुमा होना।
- ❖ पक जाने पर गुठलियों से पस निकलना।

उपचार :

- ➢ साल में एक बार गोट पॉक्स का टिका लगाना।
- ➢ मृत बकरी को गढ्ढा में चुना दे कर मिट्टी से ढंक देना।

बचाव :

- बकरी फार्म को साफ एवं स्वच्छ रखना, रोज फिनाइल से फर्श कों धोना।
- बीमार बकरी को झुण्ड से अलग रखना।

बकरी में खुजली के लिए :–

1. आइवर मैक्टिन
2. गन्धक (Sulphur) 4 ग्राम + (I) करन्ज का तेल
   (ii) ग्रीस
   (iii) नारियल तेल
   (iv) Vaseline
   (v) महुआ तेल

(Sulphur 4 ग्राम + तेल 100 ग्राम मलहम बनाकर लगाएँ)

D. खुराह-चपका रोग :-   चित्र – 26

यह एक संक्रामक रोग है जो विषाणु से होता है, इस रोग में जीभ, थुथना, तालू तथा खुर में फोड़े पड़ जाते है।

लक्षण :

- तेज बुखार।
- पैर एवं मुँह के अन्दर छाला होना।
- मुँह में छाले के कारण अत्याधिक लार निकलना।
- पैर में छाले के कारण लंगड़ा कर चलना।
- खाना खाने में कम रूचि।

उपचार :

- मुँह तथा खुर को लाल पोटास (पोटैशियम परमैगनेट) के घोल से साफ करना।
- पैरो के छालो पर एंटी–सेप्टिक दवाई लगाना।

बचाव :

- बकरी के रहने का जगह को साफ रखना, रोज फिनाइल से फर्श कों धोना।
- बीमार बकरी को झुण्ड से अलग रखना।
- साल में दो बार ऍफ.एम.डी. का टिका लगाना।

10. बकरी पालन हेतु टीकाकरण एवं कृमिकरण का वार्षिक सारणी

माह	जनवरी		फरवरी	मार्च	अप्रेल	मई		जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर			अक्टुबर	नवम्बर	दिसम्बर
कृमिकरण / टीका	कृमिकरण		ENT टीका	गोटपोक्स टीका		कृमिकरण		FMD टीका		पोक्स का टीका	कृमिकरण		ENT टीका	PPR टीका		FMD टीका
उम्र	3 माहिना से ज्यादा	3 माहिना से कम	4 माह से 2 साल तक के बकरी	3 माह से ज्यादा		3 माह से ज्यादा	3 माहीना से कम	3 माह से ज्यादा		3 माह से ज्यादा	3 माह से ज्यादा	3 माहिना से कम	4 माह से 2 साल तक के बकरी	3 माह से ज्यादा		3 माह से ज्यादा
दवा का नाम	अल्बेन्डाजोल / फेनबेन्डाजोल	पाईपराजिन (Paiperazin)		गोटपोक्स		अल्बेन्डाजोल / फेनबेन्डाजोल	पाईपराजिन (Paiperazin)	FMD		गोटपोक्स	अल्बेन्डाजोल / फेनबेन्डाजोल	पाईपराजिन (Paiperazin)	ईटी	PPR		FMD
किमत (मात्रा)	310 रु प्रति लिटर एवं 396रु प्रति लिटर (200 डोज)	30 रु० 30 मीलि	150 रु० प्रति 50 डोज	180 रु० प्रति 25 डोज		310 रु प्रति लिटर एवं 396रु प्रति लिटर (200 डोज)	30 रु० 30 मीलि	50 डोज		180 रु० प्रति 25 डोज	310 रु प्रति लिटर एवं 396रु प्रति लिटर (200 डोज)	30 रु० 30 मीलि	150 रु० प्रति 50 डोज	150 रु० प्रति 50 डोज		50 डोज
दवा का मात्रा	5 केजी वजन के लिए 1 ml 10 केजी वजन के लिए 2 ml 20 केजी वजन केलिए 5 ml	21 दिन से कम उम्र के बच्चे को नहीं देना है। 2 महीने के बच्चे को 2ml, 3 महीने के बच्चा के लिए 3 ml	1ml, प्रति बकरी	1ml, प्रति बकरी		5 केजी वजन के लिए 1 ml 10 केजी वजन के लिए 2 ml 20 केजी वजन केलिए 5ml	21 दिन से कम उम्र के बच्चे को नहीं देना है। 2 महीने के बच्चे को 2ml, 3 महीने के बच्चा के लिए 3 ml	1ml, प्रति बकरी		1ml, प्रति बकरी	5 केजी वजन के लिए 1 ml 10 केजी वजन के लिए 2 ml 20 केजी वजन केलिए 5ml	21 दिन से कम उम्र के बच्चे को नहीं देना है। 2 महीने के बच्चे को 2ml, 3 महीन के बच्चा के लिए 3 ml	1ml, प्रति बकरी	1ml, प्रति बकरी		1ml, प्रति बकरी
कहाँ देना है	5ml का सिरिंज से पिलाना है।	5ml का सिरिंज से पिलाना है।	चमड़ा और मांस के बीच में	चमड़ा और मांस के बीच में		5ml का सिरिंज से पिलाना है।	5ml का सिरिंज से पिलाना है।	चमड़ा और मांस के बीच में		चमड़ा और मांस के बीच में	5ml का सिरिंज से पिलाना है।	5ml का सिरिंज से पिलाना है।	चमड़ा और मांस के बीच में	चमड़ा और मांस के बीच में		चमड़ा और मांस के बीच में

चित्र – 28

11. कृमिकरण एवं टीकाकरण वार्षिक सारणी

महीना / पशु	चूजा	मुर्गी / मुर्गा	छोटा बकरी (3 महीना के नीचे)	बकरा / बकरी
जनवरी	कृमिकरण लसोटा	कृमिकरण लसोटा	कृमिकरण	कृमिकरण
फरवरी				ENT टीका
मार्च		फाउलपॉक्स		गोटपॉक्स का टीका
अप्रैल	कृमिकरण लसोटा	कृमिकरण लसोटा		HS + BQ टीका
मई			कृमिकरण	कृमिकरण
जून				FMD
जुलाई	कृमिकरण लसोटा	कृमिकरण लसोटा		कैल्शियम टोनिक
अगस्त				गोटपॉक्स का टीका लीवर टोनिक
सितम्बर		फाउलपॉक्स	कृमिकरण	कृमिकरण ENT टीका
अक्टूबर	कृमिकरण लसोटा	कृमिकरण लसोटा		PPR
नवम्बर				लीवर टोनिक
दिसम्बर				FMD

- कृमिकरण करने के बाद कोई भी टीकाकरण करने का समय अंतराल – मुर्गी के लिए 7 दिन एवं बकरी के लिए 15 दिन का होना चाहिए।
- एक टीकाकरण से दुसरे टीकाकरण का अतंराल कम से कम 25 दिन होना चाहिए।
- 3 महीना के ऊपर के बकरी को गोट पॉक्स, एफ.एम.डी. एवं पि.पि.आर. का टीका साल में 1 ही बार देना है।
- कोई भी टीकाकरण दोपहर के समय नहीं करना चाहिए, टीकाकरण का सही समय सुबह या शाम का समय ठीक होता है।
- गाभिन जंतुओं को किसी भी प्रकार की दवा / टीका नहीं देना है।
- टीकाकरण के दिन पशुओं को बहार नहीं छोड़ना चाहिए (घर में ही खाना देना है)।

12.खान-पान

बकरी के लिए रोग प्रतिराधि आहार :- 1

क्र० स०	आहार का प्रकार	मात्रा	दर रु० (प्रति किलो)	लागत (रु० में)
1	भुसा	4 किलो	1	4
2	गेहूं का चोकर	2 किलो	22	44
3	मक्का चुर्ण	2 किलो	11	22
4	खल्ली	2 किलो	25	50
5	गुड़	200 ग्राम	25	5
6	पशु अमृत	200 मिली लि०	250	50
7	पानी	3ली०	—	—
कुल				175/—

- चारा को हवाबंद डब्बा में 7 दिनो तक रख सकते है।
- इस आहार को प्रतिदिन 50 ग्राम प्रति बकरी देना हैं चारा के अलावा।

बकरी के लिए पोस्टिक संतुलित आहार :- 2

क्र० सं०	आहार का प्रकार	मात्रा	दर रु० (प्रति किलो)	लगत रु० में
1	भुसा	3 किलो	1	3
2	गेहूं का चोकर	2 किलो	22	44
3	दाल	2 किलो	60	120
4	मक्का का दर्रा	2 किलो	11	22
5	खल्ली	2 किलो	25	50
6	गुड़	50 ग्राम	25	1
7	मिनरल मिक्चर	100 ग्राम	200	20
8	नमक	100 ग्राम	10	1
कुल				261/—

- गाभिन एवं बड़ा बकरी के लिए 250 ग्राम पोस्टिक संतुलित आहार देना चाहिऐं ।
- छोटा बच्चा को 50 ग्राम पोस्टिक संतुलित आहार देना चाहिऐं ।
- थोड़ा बड़ा को 100 ग्राम पोस्टिक संतुलित आहार देना चाहिऐं ।
- यह आहार 40 दिनों तक इस्तेमाल किया जा सकता है।

कौन सी बकरी को खाना देना चाहिए

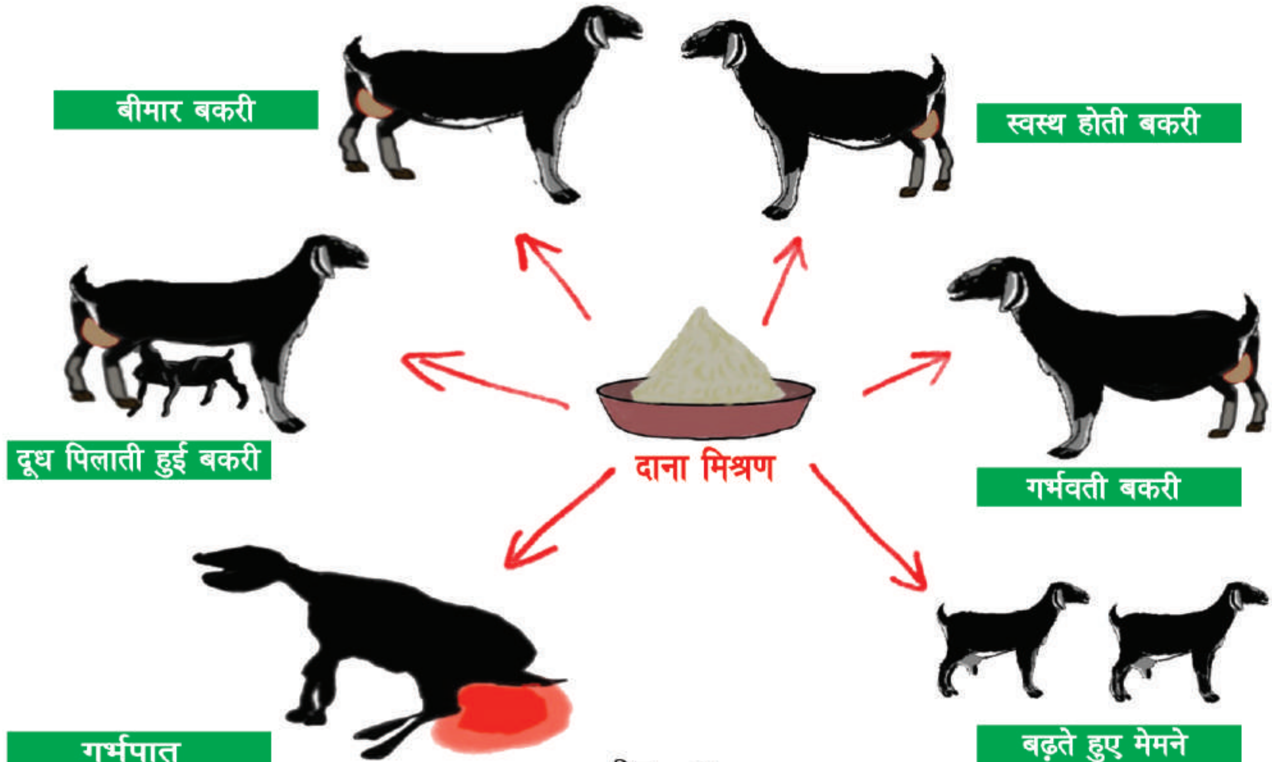

चित्र – 29

चित्र – 30

बकरी को खनिज लबण खिलाने का फायदा

1. दुग्ध उत्पादन बढ़ानें में सहयक होता है।
2. प्रजनन को नियमित करता है।
3. शरीर में चमक लाता है।
4. सूखे चारे के पाचन में मददगार होता है।
5. मादा बकरी तथा गर्भ में रहने बाले बकरी, गर्भपात बाली बकरी, दुग्ध देनी बाली बकरी को ज्यादा नमक खिलाना चाहिए।
6. बकरी को पीने के पानी के साथ नमक भी खिलायें।

चित्र – 31

13. आवास : चित्र – 32

- बकरी का घर हवादार होना चाहिए तथा खिड़की दोनो तरफ होना चाहिए।
- बकरी के लिए मचान ढालु होने से अच्छा होता हैं जो 3 फीट उँचा होगा। मचान बाँस या पट्टा के द्वारा इस प्रकार से बनाना चाहिए कि बकरी का मल नीचे गिरें लेकिन पैर न फँसे।
- एक अलग घर होना चाहिए।
- साफ सफाई चुना व राख छिड़क कर करना चाहिए।
- सप्ताह में एक बार गोबर से पुताई करना चाहिए– बिमारी कम होगी ।
- एक बकरी के लिए कम से कम 9 वर्गफीट जगह की आवश्यकता होता हैं।

14. देख-रेख

- बकरीफार्म को प्रतिदिन साफ–सफाई करना एवं फर्श को फिनाइल से धोना चाहिए।
- बकरी को छोड़ने एवं अन्दर करते समय हाथ से बकरी के शरीर को जाँच करें।
- बीमार बकरी को स्वस्थ बकरी से अलग रखना चाहिए।
- बकरी बीमार होने पर तुरंत पशु सखी/पशु चिकित्सक से संपर्क करें।
- एक साल 2 माह के बकरी या बकरा को प्रजनन के लिए नहीं छोड़ना चाहिए।
- मौसम आधार पर बकरी को चराने ले जाना चाहिए।
- नियम के अनुसार सही समय पर कृमिकरण एवं टीकाकरण कराना चाहिए।
- बकरा को दो से तीन महीने के अन्दर बंध्याकरण करना चाहिए।

चित्र – 32

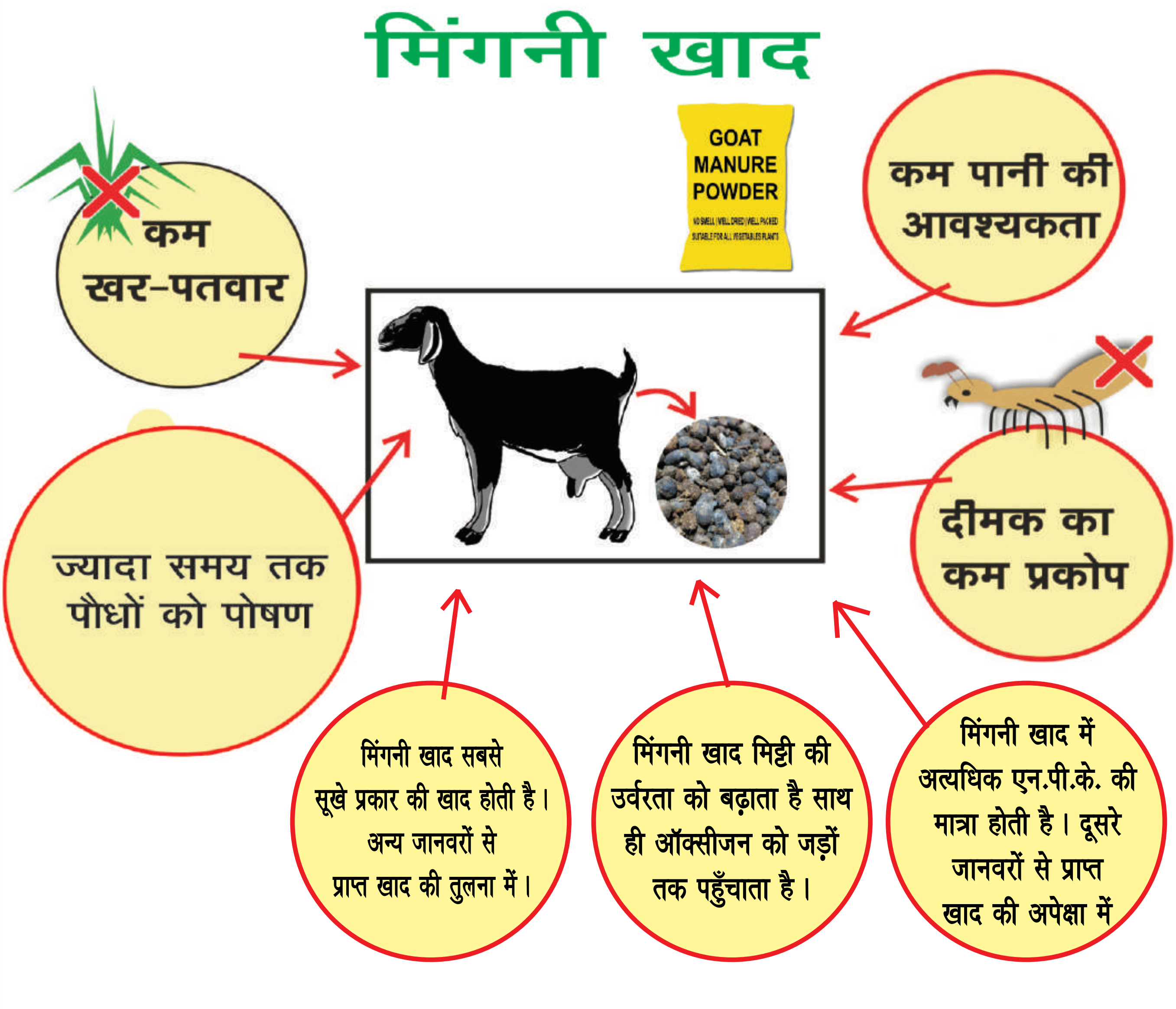

मिंगनी खाद
GOAT MANURE POWDER
कम खर-पतवार
कम पानी की आवश्यकता
ज्यादा समय तक पौधों को पोषण
दीमक का कम प्रकोप
मिंगनी खाद सबसे सूखे प्रकार की खाद होती है। अन्य जानवरों से प्राप्त खाद की तुलना में।
मिंगनी खाद मिट्टी की उर्वरता को बढ़ाता है साथ ही ऑक्सीजन को जड़ों तक पहुँचाता है।
मिंगनी खाद में अत्यधिक एन.पी.के. की मात्रा होती है। दूसरे जानवरों से प्राप्त खाद की अपेक्षा में

चित्र – 33

15. बकरी की नस्ल :-

1. जमुना पारी
2. सिरोही (राजस्थान)
3. ब्लेक बंगाल
4. बरबरी (इटावा, Agra)
5. बीटल (पंजाब)

हमारे झारखण्ड एवं बिहार राज्य में मुख्यत ब्लेक बंगाल बकरी पाये जाते है। इस बकरी का एक बार में एक से अधिक बच्चा देती है। ब्लेक बंगाल बकरी एक साल में 12 कि०ग्रा० तक बजन होता है।

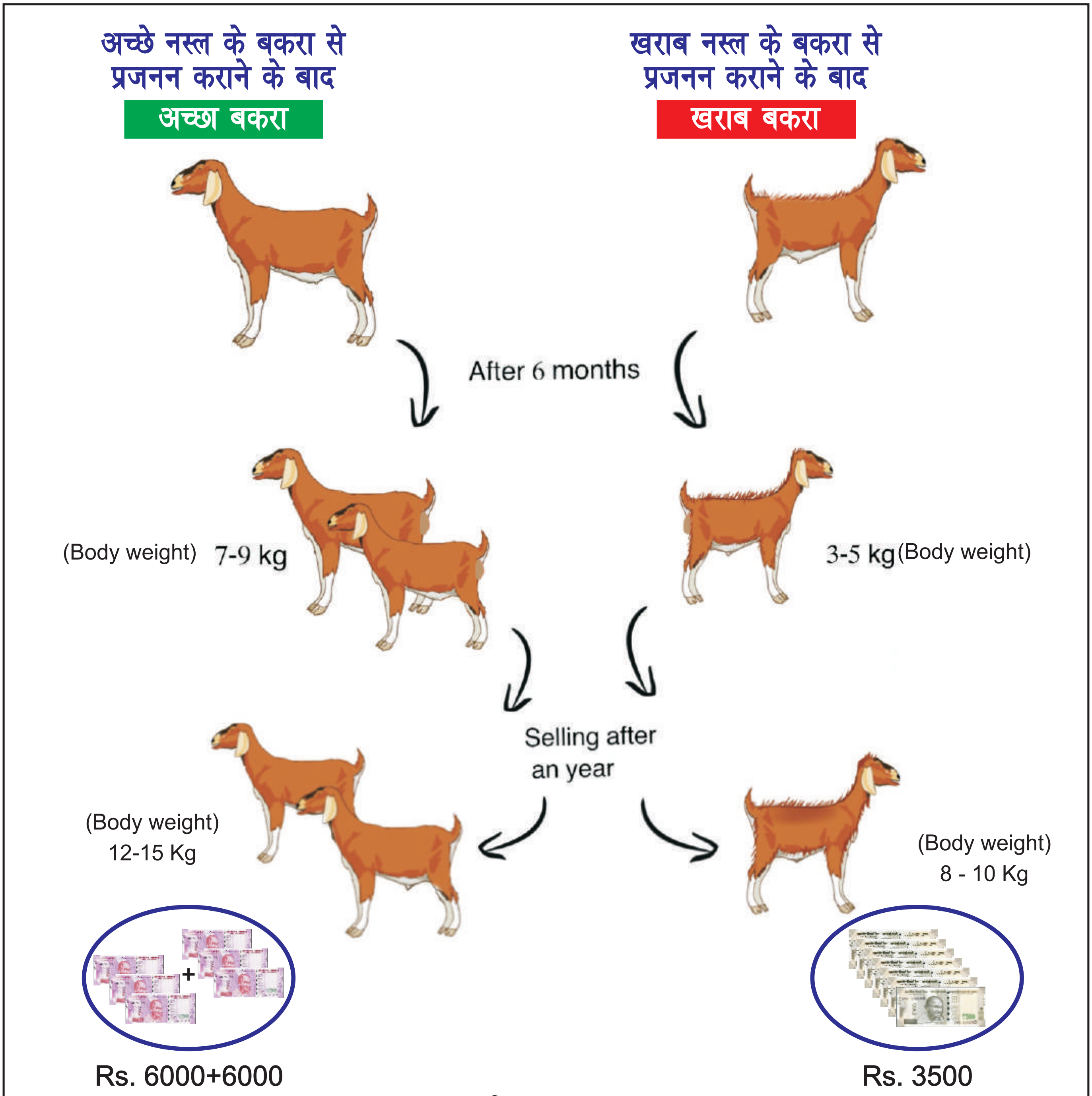

चित्र – 34

अच्छी बकरी कैसे चुनेगे

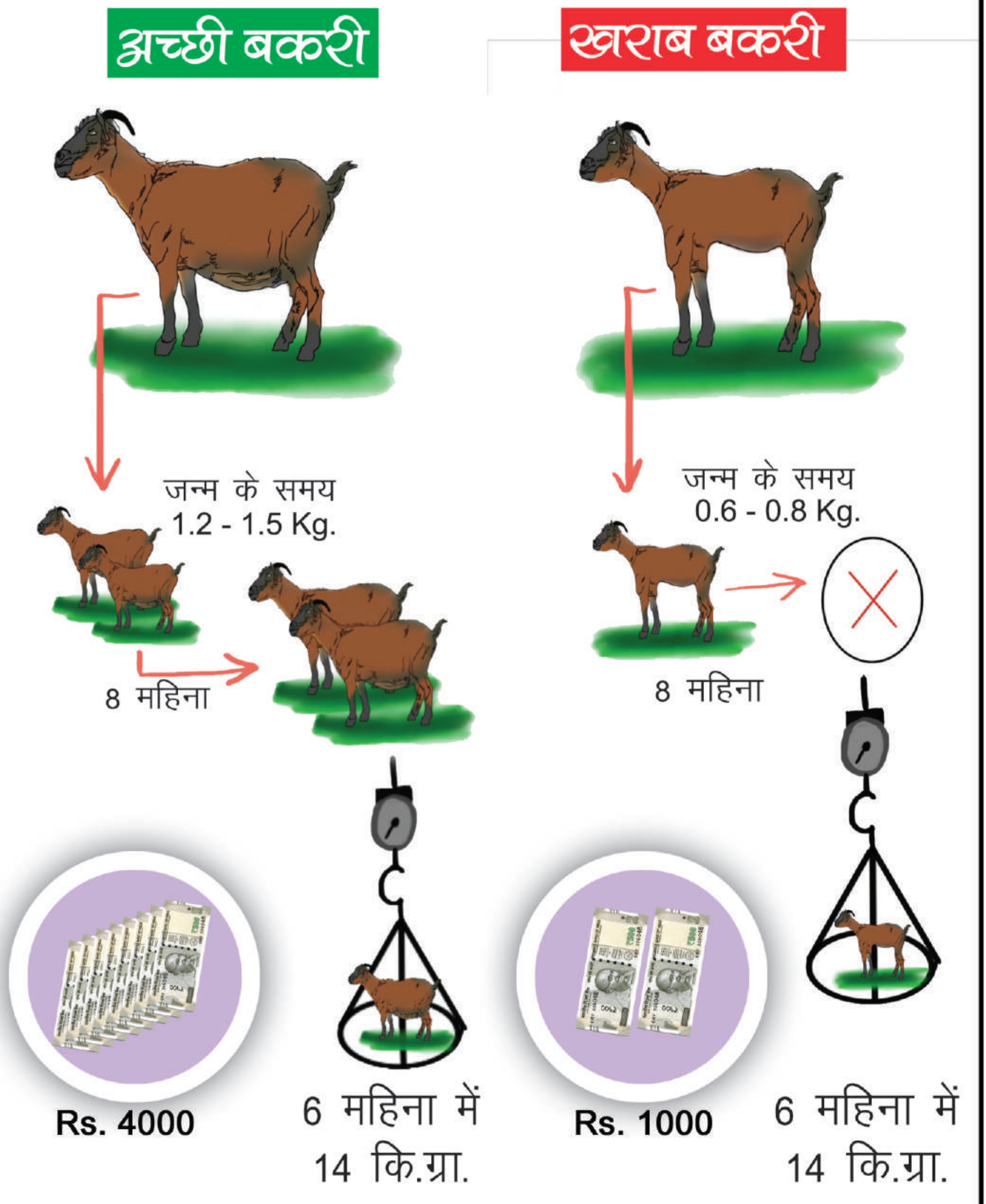

चित्र – 35

16. बंध्याकरण

बंध्याकरण से फायदे

(i) नर मेमने के समान चारा-दाना देने से ज्यादा वजन वृद्धि होती है। कीमत ज्यादा मिलती है।

(ii) नर को पालना आसान होता है क्योंकि ये लड़ाई कम करते हैं।

(iii) बच्चों व बूढ़ों को सींग मारने की संभावना कम रहती है।

(iv) बकरे शांत रहते हैं तथा ऊर्जा का मुफ्त व्यय नहीं करते।

(v) चारा-दाना खाने के समय लड़ाई नहीं करते हैं।

(vi) महिलाओं के लिए बकरा पालन आसान हो जाता है।

(vii) कम उम्र में बधियाकरण से बकरे को दर्द कम होता है तथा बधियाकरण ज्यादा प्रभावी होता है।

चित्र – 36

17. जानवरों की सामान्य जानकारी

जानवरों में अनुकूल तापमान (शरीर का Normal Temp.) :-

1. गाय, भैंस, बैल – 38^{0}C
2. भेड़ – 39^{0}C
3. बकरी– 40^{0}C (101.5 to 104 F)
4. सुअर – 39^{0}C
5. मुर्गी – 42^{0}C

दवाओं के बारे में कुछ मुख्य जानकारी :-

1 Potassium Permagnet (PP) :- घाव धुलने /साफ करने के लिए
डोज :– 1 ग्राम प्रति लीटर पानी

2. Sulpher (गन्धक) :- घाव/फोड़े के लिए
डोज :– 4 ग्राम (Sulpher) + 100 ग्राम (तेल)

3. Terpentine Oil :- कीड़ेदार फोड़े में कीड़े मारने के लिए
डोज :– 30 से 40 उस

ड्रेसिंग पाउडर :-

- कोयला पाउडर (70 भाग) – Coal Powder
- बोरिक एसिड पाउडर (15 भाग) – Boric acid Powder
- जिंक ऑक्साइड पाउडर (5 भाग) – Zinc oxide Powder
- गमकसीन पाउडर (10 भाग) – Gamaxcine 5% Powder

इसको मिलाकर मिश्रण बनाएँ और घाव को साफ करने के बाद लगाएँ। और पट्टी करें।

18. सुअर पालन

1. माँस के लिए पालते है।
2. साल में 2 बार बच्चा देती है।
3. 6 माह में 5–18 बच्चे देती है।

सुअर के नस्ल :-

1. देशी और घुघंरू
2. विदेशी
3. टेमवर्थ (सफेद या हल्का लाल रंग का होता है)

सुअर में मुख्य बिमारीयाँ :-

- Classical swine Fever (Virus Discase)
- टीका का नाम – swine Fever
- 3 माह से ऊपर वाले बच्चे को 1ml (यह 6 माह से एक साल तक काम करेगा)

कृर्मि :-

Albendazole 1ml प्रति 5 kg पर।

आयरण की कमी के लिए :-

- Dexiron Injaction :
  7 दिन के बच्चे को = 1 ml
  21 दिन पर फिर से (दूसरी बारी) = 1 ml या दूसरा तरीका है :–
- Dexorange दवा जो आयरन की कमी के उपरान्त इन्सानों को दिया जाता है, इसी दवा को सुअर (मादा) के थन में लगा देना है, जब बच्चे दूध पियेंगे तो अपने आप आयरन उनको मिल जाएगा।

FMD :-

- खाने वाला सोडा (Sodi bicarb) 4 gm - 1 ltr. पानी में घोल तैयार करे और उसको फोड़े वाली जगह पर धोएँ। इसके बाद फिटकारी 1–2 ग्राम को 100 ml पानी में मिलाएँ और उसको घाव/फोड़े वाले जगह पर लगाएँ।
- FMD टीका : 3 माह से उपर वाला (हर तरह का जानवर में) 14 दिन के बाद दूसरा इंजेक्शन दे सकते है।

घाव :-

- घाव में लगा कीड़ा को पाश्पीन तेल डालें घाव पर इससे कीड़े या मख्खी मर जाएगा।
- फिर उसको कॉटन से पोटैशियम परमैगनेट या सेवलन से अच्छी तरह साफ करें।

दवाएँ :-

- मैगसल्फ (Magnesium Sulphate) – 15 gm
- Glycerine (100 gm)
- मैगसल्फ और Glycerine मिलकर लगाएँ, इससे फोड़े या घाव की सारी गन्दगी बाहर नीकाल देगा।

घरेलू उपचार :-

- शरीफा का पत्ता या बीज को पीसकर घाव/फोड़े पर लगाएँ, इससे कीड़े मर जाएँगे।

19. बतक पालन

बतक दो तरह के :-

- माँस के लिए (Breed : पीकी) : 2 से 2.5 केजी 40 दिन में
- अण्डा के लिए (Berrd Coffee connwel) : 200 से 300 अण्डा

बतक में बीमारी एवं उपचार :-

- Duck Plague :
  Vaccine : Duck plague Vaccine (टीका :– डक फेग वेक्सीन)
- आँख से लगातार पानी आना :
  किसी बर्तन में पानी भरकर मिट्टी या जमीन में गड्ढा खोद कर बैठा दें, तथा पानी को 1 से 2 दिन के बाद बदलना है। इसमें बतक अपना मुहँ धोलेगी।

बतक के आहार में ध्यान देने वाली चीज :-

अफला टॉकासीन नामक जहरीला पदार्थ बनता है। जो खराब बदाम और मकाई के दाने में होती है। यह जहर बतक के लिए अत्याधिक हानिकारक है। इसलिए बतक को बदाम, खली, मकई की दररा नहीं देना है।

बाह्य परजीवियों के लिए :-

1. आइवरमेक्टिन – 30 कि०ग्रा० 1 ml ing.
2. Asunlde (पाउडर) – 1ग्रा० प्रति लीटर पानी में मिलाकर लगाएँ
3. Butox - 2 ml प्रति लीटर पानी में
4. गेमाक्सीन (पाउडर)– 20 ग्राम प्रति लीटर पानी

*****

20. पशुसखी कैसे होना चाहिए

- महिला मंडल / ग्राम संगठन द्वारा चयन किया गया हो।
- मुख्यतः महिला (विवाहित हो ताकि आगे भविष्य में लम्बें समय तक अपने गाँव में सेवा प्रदान करने में सक्षम रहती हैं)।
- एक पशु सखी दो ग्राम संगठन में 250—300 परिवार के साथ अच्छे तरीके से काम कर सकते है।
- सामान्यतः पढ़ना एवं लिखना आना चाहिए, कम से कम आठवीं पास हों।
- बकरी / मुर्गी पालक हो।
- परिवार में सहमती एवं सहयोग मिले।
- सामाजिक तौर पर लोगों का पसंद हो।
- सामाजिक काम में अभिरूचि रखता हो।
- इस काम के लिए पर्याप्त समय दे सकें।
- व्यवसाय में अभिरूचि।
- इस कार्य को पूरक आय के स्त्रोत के रूप में देखना चाहिए।

पशु सखी के प्रमुख दायित्व :—

- समेकित पशु पालन के बारे में जागरूक करना।
- रोग के लक्षण, टीकाकरण, उपाय एवं बचाव के लिए जागरूक करना।
- बकरी, देशी मुर्गी और अन्य पशु (क्षेत्र के प्लान अनुसार) को टीकाकरण, कृमिकरण एवं प्राथमिक उपचार।
- पशु पालक को अच्छे तरीके से पालन करने हेतु प्रशिक्षित करना एवं समय—समय पर क्षेत्र भ्रमण करना।
- पशुपालन संबंधित सरकारी और गैर सारकारी कार्यक्रम के बारे में जागरूक करना।
- पशुपालन विभाग के स्टाफ को क्षेत्र में स्वास्थ्य कैम्प, टीकाकरण आदि में मदद करना।

21. आर्थिक लागत मूल्यांकन (Cost Economics)

मुर्गी पालन के लिए :—

सामग्र	इकाई	दर	कुल मुर्गीयों की संख्या	वैधता	प्रति मुर्गी खर्च	खर्च प्रति मुर्गी प्रति वर्ष	कितने बार प्रति साल
कृमिकरण	1 Lit.	396	2500 Dose	2 Yrs.	0.1584	0.6336	साल में चार बार
लासोटा (थर्मस टेबल)	1 Vile	75	100 Dose	24 Hrs.	0.75	3	साल में चार बार
फाउल पॉक्स	1 Vile	42	200 Dose	2 Hrs.	0.21	0.42	साल में दो बार
						Rs. - 4/-	

बकरी पालन के लिए :–

सामग्र	इकाई	दर	कुल बकरीयों की संख्या	वैधता	प्रति बकरी खर्च	खर्च प्रति बकरी वर्ष	कितने बार प्रति साल
कृमिकरण	1 Lit.	396	200 Dose	2 Yrs.	1.98	5.94	साल में तीन बार
गोटपॉक्स	1 Vile	180	25 Dose	24 Hrs.	7.2	7.2	साल में एक बार
पी.पी.आर.	1 Vile	230	50 Dose	2 Hrs.	4.6	4.6	साल में एक बार
ईटि	1 Vile	150	50 Dose	2 Hrs.	3	3	साल में एक बार
						Rs. - 21/-	

पशु सखी/CAHW का आर्थिक आय : Model - A

क्र.सं०	सामग्र	कृमिकरण/टीकाकरण संख्या	लाभ/सं०/वर्ष	कुल परिवार	औसतन मुर्गी/बकरी प्रति परिवार	कुल मुर्गी/बकरी	कुल आय	टिप्पणी
1	मुर्गी का कृमिकरण/टीकाकरण	10	15	250	7	1750	26250	
2	बकरी का कृमिकरण/टीकाकरण	6	20	200	3	600	12000	
कुल रु० – 3187.5 @ प्रति महीना पशु सखी आय							**38250/-**	

पशु सखी/CAHW का आर्थिक आय : Model - B

क्र.सं०	सामग्र	कृमिकरण/टीकाकरण संख्या	लाभ/सं०/वर्ष	कुल परिवार	औसतन मुर्गी/बकरी प्रति परिवार	कुल मुर्गी/बकरी	कुल आय	टिप्पणी
1	मुर्गी का कृमिकरण/टीकाकरण	10	15	250	10	2500	37500	
2	बकरी का कृमिकरण/टीकाकरण	6	20	200	6	1200	24000	
कुल रु० – 5125 @ प्रति महीना पशु सखी आय							**61500/-**	

स्पष्टतः एक पशु सखी एक महीना में कम से कम 3000 से 5000/– आय कर सकता है, चिकत्सा, उपचार या अन्य सेवाओं के अलावा।

40,000/– मॉडल – समेकित पशुपालन द्वारा (देशी मुर्गी एवं बकरी पालन)

	मादा स्टॉक	कुल स्टॉक	टीकाकरण एवं कृमीकरण हेतु व्यय/खर्च	पूरक खाद्य/जरूरी दाना व्यवस्था (क्विंटल)	आवास हेतु जगह	बिक्री प्रति वर्ष (उत्पादन)
20000/– आय देशी मुर्गी पालन द्वारा	5 – 6	55 – 65 (7+25+18+14)	800-1100/-	1-10 क्विंटल (2-3 Kg प्रति दिन)	100 Sq. Ft.	80-100 मुर्गे (6 माह से ऊपर का मुर्गे)
20000/– आय बकरी पालन द्वारा	3 – 4	10 – 17 (4+6+7)	400-700/-	20-30 क्विंटल (8-12 Kg प्रति दिन)	200 Sq. Ft.	5-6 मुर्गे (1.5 साल का बकरे)
सही तरीके से पालन हेतु ध्यान देने योग्य बातें			1200-1800/- कैलेण्डर समय–सारणी अनुसार	27-40 क्विंटल (2-3 Kg प्रति दिन) 10 क्विंटल भूसा 10 क्विंटल चावल/मक्का/अन्य चारा 8 क्विंटल दाल खली/अजोला, अन्य – मिनिरल मिक्सचर, नमक कम लागत में उपलब्ध बाला	300 Sq. Ft. हवादार साफ–सफाई ऊँचा सीन	ग्राम संगठन स्तर पर सामुहिक बिक्री व्यवस्था पशु सखी से

घर एवं रख रखाव
नियमित बकरी घर की साफ-सफाई
मचान एवं हवादार खिड़की की व्यवस्था
विक्री
खान-पान की व्यवस्था
पानी की व्यवस्था
बकरी का दाना सूखा पत्ता, आजोला इत्यादि
स्वास्थ्य एवं नस्ल सुधार
वंध्यकरण
प्राथमिक उपचार जूं एवं ढीला
टिकाकरण (पि.पी.आर, चेचक, ई.टी.)
कृमिकरण
स्वास्थ्य
मेमना

ICICI Foundation
for Inclusive Growth

प्रदान Pradan
PROFESSIONAL ASSISTANCE FOR DEVELOPMENT ACTION